E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिधावृत्ति

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

जो शक्ति वाचक शब्द के द्वारा वाच्यार्थ का बोध कराये, उसे अभिधाशक्ति कहते हैं। इसे ही आचार्यों ने 'शब्द की प्रथमा शक्ति' कहा है।

अभिधावृत्ति को स्पष्ट करते हुए आचार्य मम्मट का कथन है-"स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते। स इति साक्षात्सङ्केतितः। अस्येति शब्दस्य।" अर्थात् वह (साक्षात् संकेतित) अर्थ ही मुख्य अर्थ है। उस मुख्य अर्थ के बोधन में शब्द का जो व्यापार है, उसे अभिधा कहते हैं। कारिका में प्रयुक्त 'स' पद से साक्षात्सङ्केतित अर्थ गृहीत है और 'अस्य' का अभिप्राय है शब्द का।

वस्तुतः आचार्य मम्मट की दृष्टि में साक्षात् संकेतित अर्थ मुख्यार्थ है। प्रथम ज्ञेय (प्रतीयमान) होने के कारण उसे मुख्य कहते हैं। इस प्रकार शब्दव्यापार से जो अर्थ अव्यवहित रूप में सर्वप्रथम (सबसे पहले) उपस्थित है, वह मुख्यार्थ है। वस्तुतः शब्द के श्रवणमात्र से ही उसका जो अर्थ प्रकट हो, उसे मुख्य अर्थ कहा जायेगा और वही प्रसङ्गप्राप्त अर्थ भी है। अभिधाशक्ति प्रसङ्गप्राप्त अर्थ का बोध कराती है। शब्दकोष में प्रत्येक शब्द का जो अर्थ दिया जाता है, उसका आधार अभिधाशक्ति ही है। जिस प्रकार हस्तपादादि समस्त अवयवों में मुख प्रधान है और प्रथम दिखाई देता है, उसी प्रकार समस्त अर्थों में जो अर्थ पहले उपस्थित होता है, मुख के समान होने से उसे 'मुख्यार्थ' कहते हैं। 'मुखमिव मुख्यः' इस अर्थ में मुख शब्द में 'शाखादिभ्यो यः' इस सूत्र से 'य' प्रत्यय होकर 'मुख्य' शब्द बनता है- "स हि यथा सर्वेभ्यो हस्तपादादिभ्योऽवयवेभ्यः पूर्वं मुखमवलोक्यते तथा सर्वेभ्यः प्रतीयमानेभ्योऽर्थेभ्यः पूर्वमवगम्यते। तस्मान्मुखमिव मुख्य इति 'शाखादिभ्यो यः' इति पाणिनिसूत्रेण 'य' प्रत्ययः"।

इसी मुख्य अर्थ का बोध कराने वाला शब्दव्यापार 'अभिधा' है । अर्थात् संकेतित अर्थ के बोधन में अव्यवहित शब्द का जो व्यापार है वह 'अभिधा' है। इस प्रकार संकेतित अर्थ का बोधन व्यापार अभिधा व्यापार है। इसे शक्ति भी कहते हैं। अभिधा शक्ति के द्वारा ही संकेतित अर्थ का बोध होता है।

भर्तृहरि के अनुसार अभिधान (वाचक) एवं अभिधेय (वाच्य) का सम्बन्ध अभिधाशक्ति से आबद्ध है। अभिधाशक्ति के द्वारा जिन वाचक शब्दों का बोध होता है, वे तीन प्रकार के होते हैं-

क) रुढ़ि-जब शब्द समुदायरूप में अर्थ का बोध कराये तो रुढ़ि होगी। रुढ़ि शब्दों के टुकड़ों का पृथक्-पृथक् अर्थ नहीं होता। इसमें शब्द की अखण्ड शक्ति से एक अर्थ का ज्ञान होता है। जैसे-श्रुति, नासिका आदि

ख) यौगिक-जब शब्द की अवयव शक्ति के द्वारा अर्थ की प्रतीति हो तो यौगिक अभिधा होगी। इसमें शब्दों के अवयव का पृथक्-पृथक् अर्थ होता है। इन शब्दों का अर्थ उनके अवयवों से जाना जाता है-भूपति, सुधांशु आदि

ग) योगरुढ़ि-जब एक ही अर्थ की प्रतीति के लिए समुदायशक्ति तथा अवयवशक्ति दोनों की आवश्यकता पड़े तो योगरुढ़ि होगी। जैसे-गणनायक शब्द गणेश के अर्थ का द्योतक है, अन्य गण के नेता को गणेश नहीं कहेंगे।